मंगलाचरण

घाति कर्म चउ नाश किये तब, अर्हत् पद को प्राप्त किया।
समवसरण की रचना करके, देवों ने जयकार किया॥
भविक भाग्य वश वचन खिरें तब, मोक्षमार्ग संदेश दिया।
असारता जग की बतलाकर, जीवों का कल्याण किया॥1॥
सुप्त चेतना जाग उठी है, ऋषि मुनियों का हृदय खिला।
दिव्य वचन के प्यासों को तब, निर्मल सम्यक् ज्ञान मिला॥
जिनवाणी ओंकारमयी है, सर्व अंग से खिरती है।
असंख्यात जीवों के सारे, मोह तमस को हरती है॥ 2॥
द्वादशांगमय सप्त भंग के, सप्त सितारे अनुपम हैं।
स्याद्वादमय अनेकान्त की, कथनी भी सुंदरतम हैं॥
अंगप्रविष्ट नमूँ जिनवाणी, अंगबाह्य को वंदन है।
चौदह पूर्व नमूँ इक सौ पंचानवें वस्तु वंदन है॥3॥
तीन सहस नौ सौ प्राभृत पूर्वों की संख्या मानी है।
निज स्वरूप की अनुभूति कर, ऋषियों ने भी जानी है॥
एक सौ बारह कोटि तिरासी, लाख अट्ठावन पंच कहे।
द्वादशांग में पद की संख्या, प्रामाणिक जिनवचन रहें॥4॥
जिनवाणी के श्रवण पठन में, शुभ उपयोगी होता है।
परम शुद्ध उपयोगी होता, जो जिन वच में रमता है॥
श्रुत स्कंध की महिमा यतिपति, गणधर ने भी गायी है।
तीव्र पुण्य संयोग हमारा, माँ जिनवाणी पायी है॥ 5॥
बुद्धिहीन बुद्धि बल पाते, अज्ञानी ज्ञानी होते।
सातिशय वे पुण्य प्राप्तकर, अर्हत् पद को पा लेते॥
इस विधान की महिमा भारी, कष्ट सभी मिट जाते हैं।
जिनवाणी की पूजा करके, सभी पाप धुल जाते हैं॥6॥
द्रव्य भाव श्रुत जिन वचनों को, अंतर आतम में धर लूँ।
भवसागर से पार उतरने, श्रद्धा से अर्चन कर लूँ॥
ज्ञान सिंधु विद्या का सागर, श्रुत स्कंध को वंदन है।
मन-वच-तन से जिनवाणी का, भावों से अभिनंदन है॥7॥

श्रुत स्कंध पूजा प्रारंभ

स्थापना

चौबोला छंद

जय अनंत उपकारी वाणी, तीन जगत की कल्याणी।
बिन इच्छा के खिरती प्यारी, मेघ गर्जना सम वाणी॥
दिव्यध्वनि ना सुनी अभी तक, इसीलिए दुख पाये हैं।
प्रबल पुण्य का उदय हुआ अब, जिनवच को सुन पाये हैं॥1॥
चौदह पूर्व अंग द्वादश से, भूषित जिनवाणी माता।
स्वर्गों के सुख नहीं चाहिए, शिवसुख दो मुझको साता॥
कर्मों की सत्ता नश जाये, यही भाव ले आया हूँ।
हृदय वेदी पर श्रद्धा से मैं, स्थापन करने आया हूँ॥2॥

ॐ ह्रीं श्रुतस्कंधकल्पद्रुम! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रुतस्कंधकल्पद्रुम! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रुतस्कंधकल्पद्रुम! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

चौबोला छंद

श्रुत सागर में ज्ञान नीर का, अक्षय गुण भंडार भरा।
श्रद्धा का जल चरण चढ़ाता, नाश करूँ अब जन्म जरा॥
आप्त कथित गूँथी गणधर मुनि, महा रचित है जिनवाणी।
स्व-पर तत्त्व का भेद कराती, दिव्यध्वनि है कल्याणी॥1॥

ॐ ह्रीं श्रुतस्कंधकल्पद्रुमाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं....।

दिव्यध्वनि खिरती तो लगता, केशरिया चंदन बरसा।
हृदय हो गया शीतल सबका, मेरा मन भी है तरसा॥
आप्त कथित गूँथी गणधर मुनि, महारचित है जिनवाणी।
स्व-पर तत्त्व का भेद कराती,दिव्यध्वनि है कल्याणी॥2॥

ॐ ह्रीं श्रुतस्कंधकल्पद्रुमाय भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

जग मग करती उज्ज्वल वाणी, अक्षय सुख का है आगर।
तंदुल चरण चढ़ाऊँ भगवन्, श्रुत से भर दो उर गागर॥
आप्त कथित गूँथी गणधर मुनि, महारचित है जिनवाणी।
स्व-पर तत्त्व का भेद कराती, दिव्यध्वनि है कल्याणी॥ 3॥

ॐ ह्रीं श्रुतस्कंधकल्पद्रुमाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

आगम की बगिया में चारों, अनुयोगों के सुमन खिले।
गणधर ऋषिवर मुनिवर बैठे, श्रुत पादप की छाँव तले॥
आप्त...॥ 4॥

ॐ ह्रीं श्रुतस्कंधकल्पद्रुमाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं....।

दोष अठारह मुक्त हुए हैं, क्षुधा रोग का काम नहीं।
अनुपम समता रस को पीकर, पाऊँ मैं ध्रुवधाम मही॥
आप्त ...॥5॥

ॐ ह्रीं श्रुतस्कंधकल्पद्रुमाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

जिनवाणी के सप्त सितारे, तीन लोक उद्योत करें।
करूँ आरती स्याद्वाद की, मोह तिमिर का नाश करें॥
आप्त ...॥6॥

ॐ ह्रीं श्रुतस्कंधकल्पद्रुमाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं....।

मम उपयोग भटकता पर में, श्रुत आगम में लीन करो।
ध्यानाग्नि में कर्म जले सब, हृदयकमल पर वास करो॥
आप्त ...॥7॥

ॐ ह्रीं श्रुतस्कंधकल्पद्रुमाय अष्टकर्मदहनाय धूपं....।

मोक्ष रूप श्रीफल को देती, जिनवाणी मंगलकरणी।
श्रद्धा का फल भेंट चढ़ाऊँ, शिवपुर पथ की दो तरणी॥
आप्त ...॥ 8॥

ॐ ह्रीं श्रुतस्कंधकल्पद्रुमाय मोक्षफलप्राप्तये फलं....।

अष्टद्रव्य का थाल सजाया, आत्म द्रव्य को भूल गया।
भावभक्ति से अर्घ्य बना अब, जिन वचनों को नमन किया॥
आप्त ...॥9॥

ॐ ह्रीं श्रुतस्कंधकल्पद्रुमाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं....।

प्रथम वलय अर्घ्यावली

दोहा

द्वादश अंग सु-पूर्व है, चौदह भेद प्रमाण।
श्रुत अपार, नहीं पार है, जिन वच करूँ प्रणाम॥

इति मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

चौपाई

मुनिजन के आचार बताये, गुप्ति समिति व्रत को बतलाये।
पद अष्टादश सहस प्रमाणी, 'आचारांग' नमूँ जिनवाणी॥1॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतआचारांगाय अर्घ्यं ....।

विनय अध्ययन धर्म की क्रिया, स्व समय-पर समय की चर्या।
पद छत्तीस हजार प्रमाणी, 'सूत्रकृतांग' नमूँ जिनवाणी॥2॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतसूत्रकृतांगाय अर्घ्यं ....।

द्रव्य तत्त्व के भेद कहे हैं, एकादिक सब स्थान कहे हैं।
शुभ 'स्थानांग' नमूँ कल्याणी, बियालीस पद सहस प्रमाणी॥3॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतस्थानांगाय अर्घ्यं ....।

द्रव्य क्षेत्र औ काल अपेक्षा, जो समान हैं भाव अपेक्षा।
इक लख चौंसठ सहस पदों को, 'समवायांग' कहे वचनों को॥4॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतसमवायांग अर्घ्यं ....।

जीव नित्य या अनित्य भी हैं, साठ सहस प्रश्नोत्तर भी हैं।
सहस अठाइस पद लख दो हैं, 'व्याख्याप्रज्ञप्ती' मन मोहे॥5॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतव्याख्याप्रज्ञप्तिअंगाय अर्घ्यं ....।

श्री जिनवर की ध्वनि बताएँ, तीर्थंकर की धर्म कथाएँ।
पद लख पन छप्पन हजारा, 'ज्ञातृधर्मकथांग' सु-प्यारा॥6॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतज्ञातृधर्मकथांगाय अर्घ्यं ....।

श्रावक की ग्यारह प्रतिमा का, वर्णन करता है सुंदर।
षट् आवश्यक बतलाता है, जिनवर के वच है हितकर॥
'उपासकाध्ययनंग' पूज्य है , वसु विध अर्घ्य चढ़ाऊँ मैं।
ग्यारह लाख सहस सत्तर पद, उनको शीश नवाऊँ मैं॥ 7॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतउपासकाध्ययनांगाय अर्घ्यं ....।

तीर्थंकर के तीर्थकाल में, शिव पाने उपसर्ग सहें।
दश मुनिवर प्रत्येक तीर्थ में, सुख पाते भव अंत करें॥
तेइस लख अठबीस सहस पद, सबको शीश नवाऊँ मैं।
'अन्तकृद्दशअंग' शास्त्र को, सादर अर्घ्य चढ़ाऊँ मैं॥ 8॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअन्तकृतदशांगाय अर्घ्यं ....।

दश मुनिवर प्रत्येक तीर्थ में, समता धर उपसर्ग सहें।
कर समाधि विजयादि अनुत्तर, विमान में उत्पन्न हुए॥
लाख बानवे सहस चवालीस, पद बुधजन ने जाने हैं।
दशों 'अनुत्तरउपपादिक' को, श्री तीर्थेश बखाने हैं॥ 9॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअनुत्तरौपपादिकदशांगाय अर्घ्यं ....।

लाभ-हानि का वर्णन करता, चार कथाओं को कहता।
आक्षेपण निक्षेपण कहता, संवेदन निर्वेद कथा॥
लक्ष तिरानवे सहस्र सोलह, पद से वर्णन करता है।
'प्रश्नव्याकरणअंग' प्रश्न के, सटीक उत्तर देता है॥ 10॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतप्रश्नव्याकरणांगाय अर्घ्यं ....।

द्रव्य क्षेत्र औ काल भाव से, कर्म फलों को कहता है।
तीव्र मंद भावानुसार यह, जीवों को बतलाता है॥
इक करोड़ चौरासी लख पद, 'विपाकसूत्र' में कहते हैं।
प्रभु की दिव्यध्वनि उपकारी, भावों से हम नमते हैं॥11॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतविपाकसूत्रांगाय अर्घ्यं ....।

तीन शतक त्रेसठ मत कहके, निराकरण भी करता है।
द्रव्य लोक मंत्रादिक वर्णे, पंच भेद युत होता है॥
इक सौ अठ करोड़ अड़सठ लख, हजार छप्पन पन पद हैं।

'दृष्टिवाद' बारहवें अंग को, बारम्बार नमन मम है॥12॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतदृष्टिवादांगाय अर्घ्यं ....।

द्वितीय वलय अर्घ्यावली

दृष्टिवाद के भेद पन, पंचम गति हित जान।
जिन मुख से वाणी खिरी, श्रद्धा सहित प्रणाम॥

इति मंडलस्योपरिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

दृष्टिवाद के पाँच भेद हैं, परिकर्म व सूत्र कहे।
जिनभाषित 'प्रथमानुयोग' है, पूर्वगतचूलिका कहे॥
परिकर्म के भेद पाँच हैं, 'चन्द्रप्रज्ञप्ति' पहला।
ज्योतिष इन्द्र चन्द्र की आयु, कहे गमन की बेला॥1॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतचन्द्रप्रज्ञप्तये अर्घ्यं ....।

भेद दूसरा 'सूर्यप्रज्ञप्ति', भास्कर का वर्णन है।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, भावों से वंदन है॥
प्रतीन्द्र के आयु विमान गति, अहनिशि का वर्णन है।
ऐसी माँ जिनवाणी को ही, जीवन धन अर्पण है॥2॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतसूर्यप्रज्ञप्तये अर्घ्यं ....।

मेरु पर्वत क्षेत्र वेदिका, चैत्यालय बतलाये।
व्यंतर के आवास महानदि, सुर भवनादि बताये॥
'जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति' प्यारा, श्रद्धा अर्घ्य चढ़ाऊँ।
दिव्यध्वनि को नमूँ भाव से, भव का भ्रमण नशाऊँ॥3॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तये अर्घ्यं ....।

मध्यलोक में द्वीप समंदर, असंख्यात बतलाये।
अकृत्रिम चैत्यालय रचना, सुविस्तृत समझाये॥
नमूँ 'द्वीपसागरप्रज्ञप्ति', मुझे ज्ञान दो माता।
काल अनंता दुखमय बीता, दो शाश्वत सुख साता॥4॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतद्वीपसागरप्रज्ञप्तये अर्घ्यं ....।

भव्याभव्य जीव द्रव्यों का, अजीव का वर्णन है।
सिद्धालय में रहने वाले, सिद्धों को वंदन है॥
'व्याख्याप्रज्ञप्ती' व्याख्याएँ, सरल स्पष्ट करती है।
जिनवाणी माँ भव्य पुत्र के, संकट सब हरती है॥5॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतव्याख्याप्रज्ञप्तये अर्घ्यं ....।

तृतीय वलय अर्घ्यावली

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

दृष्टिवाद बारहवें अंग का, 'सूत्र' भेद है दूजा।
तीन शतक त्रेसठ मत इसमें, न्यायशास्त्र की पूजा॥
श्रेष्ठ गणित का वर्णन करती, भवतरणी है वाणी।
तू ही माँ पतवार हमारी, जिनवाणी कल्याणी॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतदृष्टिवादभेदसूत्राय अर्घ्यं ....।

चतुर्थ वलय अर्घ्यावली

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

तीर्थंकर चक्री नारायण, इनका वर्णन करता।
त्रेसठ महापुरुष ज्ञानी का, जीवन दर्शन कहता॥
पुण्य चरित्र कथाओं को, 'प्रथमानुयोग' दर्शाता।
अनंत उपकारी जिन गी[1] को, मैं भी अर्घ्य चढ़ाता॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतदृष्टिवादभेदप्रथमानुयोग अर्घ्यं ....।

पंचम वलय अर्घ्यावली

दोहा

चौदह पूर्वों को नमूँ, अपूर्व अवसर आज।
स्वारथ का संसार तज, पाऊँ सिद्ध समाज॥

इति मंडलस्योपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

1. गी=वाणी

दृष्टिवाद बारहवें अंग का, भेद चतुर्थ पूर्वगत है।
व्यय उत्पाद ध्रौव्य वर्णे, 'उत्पादपूर्व' वंदन शत है॥
पूर्व काल अज्ञान दशा में, प्रथम पूर्व ना श्रवण किया।
क्षमा कीजिए माँ जिनवाणी, भावों से अब शरण लिया॥1॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतउत्पादपूर्वाय अर्घ्यं ....।

दुर्नय और सुनय से विस्तृत, द्रव्य तत्त्व वर्णन करता।
द्वितीय पूर्व 'अग्रायणीय' है, षट्खण्डागम को कहता॥
पूर्व काल अज्ञान दशा में, द्वितीय पूर्व ना श्रवण किया।
क्षमा कीजिए माँ जिनवाणी, भावों से अब शरण लिया॥2॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअग्रायणीयपूर्वाय अर्घ्यं ....।

आत्म वीर्य परवीर्य द्रव्य गुण, पर्यय शक्ति बतलाता।
तप संयम की शक्ति को, 'वीर्यानुवाद' ये दर्शाता॥
पूर्व काल अज्ञान दशा में, तृतीय पूर्व ना श्रवण किया।
क्षमा कीजिए माँ जिनवाणी, भावों से अब शरण लिया॥3॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतवीर्यानुप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं ....।

छह द्रव्यों के स्व-पर चतुष्टय,अस्ति नास्ति आदिक कहता।
'पूर्व अस्तिनास्तिप्रवाद' यह, सप्तभंग को दर्शाता॥
पूर्व काल अज्ञान दशा में, चतुर्थ पूर्व ना श्रवण किया।
क्षमा कीजिए माँ जिनवाणी, भावों से अब शरण लिया॥4॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअस्तिनास्तिप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं ....।

पाँच ज्ञान के भेदों का जो, वर्णन करता युक्ति से।
'ज्ञानप्रवादपूर्व' आतम का, मिलन कराता मुक्ति से॥
पूर्व काल अज्ञान दशा में, पंचम पूर्व ना श्रवण किया।
क्षमा कीजिए माँ जिनवाणी, भावों से अब शरण लिया॥5॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतज्ञानप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं ....।

'सत्यप्रवाद' वचन गुप्ति दश, सत्य भेद मौनादिक का।
वचन प्रयोग शब्द उच्चारण, कंठ आदि स्थानादिक का॥
पूर्व काल अज्ञान दशा में, षष्टम पूर्व ना श्रवण किया।

क्षमा कीजिए माँ जिनवाणी, भावों से अब शरण लिया ॥6 ॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतसत्यप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं ....।

'आत्मप्रवाद' आत्मसंबंधी, कर्ता भोक्ता दर्शाता।
निश्चय से है जीव शुद्ध व्यवहार विकारी है कहता॥
पूर्व काल अज्ञान दशा में, सप्तम पूर्व ना श्रवण किया।
क्षमा कीजिए माँ जिनवाणी, भावों से अब शरण लिया ॥7 ॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतआत्मप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं ....।

कर्मों की लीला कर्मों में, फिर भी मोही भरमाता।
'कर्मप्रवाद पूर्व' कर्मों की, सभी दशाएँ बतलाता॥
पूर्व काल अज्ञान दशा में, अष्टम पूर्व ना श्रवण किया।
क्षमा कीजिए माँ जिनवाणी, भावों से अब शरण लिया ॥8 ॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतकर्मप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं ....।

द्रव्य क्षेत्र कालादि से व्रत, त्याग विधि को समझाता।
'प्रत्याख्यानप्रवाद पूर्व' यम, नियम करो यह भी कहता॥
पूर्व काल अज्ञान दशा में, नवम पूर्व ना श्रवण किया।
क्षमा कीजिए माँ जिनवाणी, भावों से अब शरण लिया ॥9 ॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतप्रत्याख्यानप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं ....।

महान विद्या कही पाँच सौ, लघु सात सौ बतलाई।
मंत्र तंत्र विद्या सिद्धि 'विद्यानुपूर्व' में दिखलाई॥
पूर्व काल अज्ञान दशा में, दशम पूर्व ना श्रवण किया।
क्षमा कीजिए माँ जिनवाणी,भावों से अब शरण लिया ॥10 ॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतविद्यानुप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं ....।

सूर्य चन्द्र ग्रह सब नक्षत्रों, तारों का संचार कहा।
ग्यारहवें 'कल्याणवाद' में, गर्भादिक कल्याण महा॥
पूर्व काल अज्ञान दशा में, ग्यारह पूर्व ना श्रवण किया।
क्षमा कीजिए माँ जिनवाणी,भावों से अब शरण लिया ॥11 ॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतकल्याणप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं ....।

अष्ट अंग युत आयुर्वेद में, काय चिकित्सा प्राणायाम।
'प्राणावायप्रवाद पूर्व' में वर्णन है मैं करूँ प्रणाम॥

पूर्व काल अज्ञान दशा में, बारह पूर्व ना श्रवण किया।
क्षमा कीजिए माँ जिनवाणी,भावों से अब शरण लिया॥12॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतप्राणावायप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं ....।

छंद नृत्य व्याकरण शिल्प औ, पुरुषादिक लक्षण कहता।
जो नमता 'क्रियाविशाल' को, सारा जग उसको नमता॥
पूर्व काल अज्ञान दशा में, तेरह पूर्व ना श्रवण किया।
क्षमा कीजिए माँ जिनवाणी,भावों से अब शरण लिया॥13॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतक्रियाविशालपूर्वाय अर्घ्यं ....।

तीन लोक का स्वरूप कहता, मोक्ष विधि को बतलाता।
'लोकबिंदुसारपूरव' यह, बीज गणित को समझाता॥
पूर्व काल अज्ञान दशा में चउदह पूर्व ना श्रवण किया।
क्षमा कीजिए माँ जिनवाणी,भावों से अब शरण लिया॥14॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतलोकबिन्दुसारपूर्वाय अर्घ्यं ....।

षष्टम वलय अर्घ्यावली

ऐसी दृष्टि दीजिए, निज का दर्शन होय।
सिद्धक्षेत्र का पथिक बन, सर्व कर्म मल धोय॥

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शंभु छंद

इस दृष्टिवाद का अंतिम पंचम भेद चूलिका कहा गया।
कुल पाँच भेद इसके भी हैं,औ प्रथम 'जलगता' बतलाया॥
जल में भी पृथ्वी सम चलना, और अग्नि का भक्षण करना।
इनके जो भी मंत्रादिक हैं, उनको बतलाते जिन वचना॥1॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतजलगताचूलिकायै अर्घ्यं ....।

पृथ्वी के भीतर गमन हेतु, शुभ मंत्र तंत्र बतलाये हैं।
धरती से संबंधित सारे शुभ, अशुभ विषय समझाये हैं॥
'थलगता' वास्तु संबंधी सब, वर्णन करती सुखदायी है।
मैं सिद्धालय को पा जाऊँ, जिनवाणी माँ शिवदायी है॥2॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतस्थलगताचूलिकायै अर्घ्यं ....।

अद्भुत मायामय क्रीड़ायें, यह 'मायागता' बताती है।
सब इन्द्रजाल मय मायाएँ, और मंत्रविधि दिखलाती है॥
कर्मों ने मायाजाल रचा, इससे मुझको भी बचना है।
हे माँ जिनवाणी कृपा करो, पावन वचनों को सुनना है॥3॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतमायागताचूलिकायै अर्घ्यं ....।

यह 'रूपगता' चूलिका शेर, हिरणादि मनुज के रूपों को।
धारण करने के हेतू मंत्र, तंत्रादिक वर्णे भविजन को॥
सब चित्र काष्ठ के कर्मों को, प्रभु दिव्यध्वनि बतलाती है।
मंगलमय जिनवाणी पावन, मुक्ति का पथ दिखलाती है ॥4॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतरूपगताचूलिकायै अर्घ्यं ....।

'आकाशगता' चूलिका गगन में जाने का साधन कहती।
यह सम्यक् मंत्र तपस्यादिक विधि भव्यजनों को सिखलाती॥
निज चिदाकाश में गमन करूँ, बस यही भावना भाता हूँ।
सिद्धालय वास करूँ शाश्वत, श्रद्धा से अर्घ्य चढ़ाता हूँ॥5॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतआकाशगताचूलिकायै अर्घ्यं ....।

सप्तम वलय अर्घ्यावली

चौदह प्रकीर्णक अर्घ्य

चौदह भेद स्वरूप हैं, अंग बाह्य शुभ नाम।
सामायिक से निषिद्धिका, सभी प्रकीर्णक जान॥

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

सखी छंद

त्रय संध्या में 'सामायिक', मन-वचन और शुभ कायिक।
समता भावों को धरना, ना राग-द्वेष को करना॥1॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्यसामायिकप्रकीर्णक-श्रुताय अर्घ्यं ....।

तीर्थंकर की भक्ती का, चौबीस जिनेश थुति का।
'स्तव' में स्तुति का फल वर्णन, श्रद्धा से अर्घ्य समर्पण॥2॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्यचतुर्विंशतिस्तव- प्रकीर्णक श्रुताय अर्घ्यं ....।

किसी एक विभु का वंदन, परमेष्ठी पद की पूजन।
'वंदन' विधि फल दर्शाता, कर्मों के बंध नशाता ॥3॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्यवंदनाप्रकीर्णक श्रुताय अर्घ्यं ....।

है प्रतिक्रमण सत भेदा, दिन-रात पक्ष आदिक का।
पूरव के कर्म धुलाता, दे 'प्रतिक्रमण' सुख साता ॥4॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्यप्रतिक्रमणप्रकीर्णक श्रुताय अर्घ्यं ....।

दर्शन चरित्र उपचार, करो ज्ञान विनय ये चार।
कहे स्वरूप औ फलभेद, 'वैनयिक' से मिले विवेक ॥5॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्यवैनयिकप्रकीर्णक श्रुताय अर्घ्यं ....।

अरहंत देव आराधन, सूरि उवज्झाय सु वंदन।
सब सिद्धप्रभु की पूजन, 'कृतिकर्म' करे शुभ वर्णन ॥6॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्यकृतिकर्मप्रकीर्णक-श्रुताय अर्घ्यं ....।

मुनि अहार चर्या वर्णन, 'दशवैकालिक' को वंदन।
शुद्धि का ज्ञान कराता, मैं श्रद्धा से गुण गाता ॥7॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्यदशवैकालिक-प्रकीर्णक श्रुताय अर्घ्यं ....।

उपसर्ग परीषह सहना, श्रीमुक्तिरमा को वरना।
इन सबका वर्णन करता, 'उत्तराध्ययन' मैं नमता ॥8॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्यउत्तराध्ययनप्रकीर्णक श्रुताय अर्घ्यं ....।

व्रत को पाले मुनिराया, जो भी अतिचार लगाया।
परिमार्जन विधि दर्शाता, 'कल्प्यव्यवहार' सुहाता ॥9॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्यकल्प्यव्यवहार-प्रकीर्णक श्रुताय अर्घ्यं ....।

मुनी और श्रावकाचार, कहे योग्यायोग्य विचार।
है 'कल्पाकल्प' महाना, मुझको शिव राह दिखाना ॥10॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्यकल्प्याकल्पप्रकीर्णक श्रुताय अर्घ्यं ....।

मुनी दीक्षा शिक्षा और, गणपोषण दृढ़ संस्कार।
है उत्तमार्थ सल्लेखन, 'महाकल्प' करें सब वर्णन ॥11॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्यमहाकल्प्याप्रकीर्णक श्रुताय अर्घ्यं ....।

भवनत्रिक वैमानिक में, उत्पादक वर्णन इसमें।
इनके सुख वैभव कहता, मैं 'पुण्डरीक' को नमता ॥12॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्यपुण्डीकप्रकीर्णक श्रुताय अर्घ्यं ....।

इन्द्रोत्पत्ती के साधन, बतलाता है जैनागम।
'महापुण्डरीक' है न्यारा, वंदन शत बार हमारा॥13॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्यमहापुण्डरीकप्रकीर्णक श्रुताय अर्घ्यं ....।

तन बल संहनन अनुसार, थूल सूक्ष्म दोष परिहार।
नमूँ 'निषिद्धिका' आगम को, पा जाऊँ परमातम को॥14॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्यनिषिद्धिकाप्रकीर्णक श्रुताय अर्घ्यं ....।

अष्टम वलय अर्घ्यावली

चार अनुयोग अर्घ्य

तीर्थंकर हितकार, भाषित चउ अनुयोग हैं।
प्रथम करण शुभ नाम, चरण द्रव्य को भी नमूँ॥
इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चौबोला

प्रथमानुयोग जग की विचित्रता, पुण्य-पाप फल दर्शाता।
पुण्य पुरुष के चरित बताकर, धर्म मार्ग में पहुँचाता॥
बोधि समाधि का साधन है, अष्ट द्रव्य से मैं पूजूँ।
भव तन भोगों से विराग धर, अष्ट कर्म से मैं छूटूँ॥1॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतप्रथमानुयोगसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं ....।

लोक अलोक विभाजन करके, चउ गति दुख को बतलाता।
श्री करणानुयोग भावों को, दर्पण सम है दिखलाता॥
स्वर्ग नरक का ज्ञान करो फिर, शिवरमणी का वरण करो।
भव-कानन में अब ना भटको, जिन कहते निज रमण करो॥2॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतकरणानुयोगसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं ....।

यह चरणानुयोग मुनिवर औ, गृहस्थ व्रत वर्णन करता।
पाप कर्म से छुड़ा पुण्य अनुबंधि पुण्य को बतलाता॥
वीतराग पथ में लग जाओ, कुगुरु कुदेव न पूजो तुम।
माँ जिनवाणी कहती है अब, परमातम बन जाओ तुम॥3॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतचरणानुयोगसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं ....।

सप्त तत्त्व और पाप पुण्य को, प्रभु की वाणी बतलाती।
ज्ञान रश्मियाँ भविक जनों के, मोह तमस को हैं हरती॥
द्रव्य तत्त्व नव पदार्थ में निज, शुद्धातम आदेय कहा।
स्व-सन्मुख दृष्टि हो मेरी, निज को पाना ध्येय रहा॥4॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतद्रव्यानुयोगसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं ....।

श्रीगुणधर आचार्य वर्य ने, कसायपाहुड ग्रंथ रचा।
साठ सहस है श्लोक प्रमाणी, टीका ये जयधवल रचा॥
मोह कर्म का किया सु-वर्णन, वीरसेन जिनसेन गुरु।
दुखदायी चारों कषाय का, नाश हेतु यह अर्घ्य धरूँ ॥5॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतजयधवलाटीकासमेतकषायप्राभृतग्रन्थाय अर्घ्यं ....।

सूरीश्वर धरसेन गुरू ने, ज्ञान दिया द्वय मुनिवर को।
पुष्पदंत मुनि भूतबलि जी, हृदय धरे सारे श्रुत को॥
षट्खंडागम रचना की तब, श्रुतपंचमी का पर्व मना।
श्लोक बहत्तर सहस प्रमाणी, धवल ग्रंथ को नमन घना॥6॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतजयधवलाटीकासमेतषट्खण्डागमग्रन्थाय अर्घ्यं ....।

प्रकृति स्थिति अनुभाग प्रदेश को महाबंध है दर्शाये।
कर्म बंध सत्ता उदयादिक, विशद रूप से समझाये॥
योग कषाय बंध के कारण, बंध रहित हो जाऊँ मैं।
महाबंध यह शास्त्र महा, श्रद्धा से अर्घ्य चढ़ाऊँ मैं॥7॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतमहाधवलाटीकासमेतमहाबंधग्रन्थाय अर्घ्यं ....।

पूर्वकाल में मिथ्यातम वश, जीवन यूँ ही बिता दिया।
जिनवाणी का विनय किया ना, भव संतति को बढ़ा दिया॥
क्षमा करो जिनवाणी माता, द्रव्य भाव श्रुत नमन करूँ ।
जहाँ-जहाँ सद् ग्रंथ विराजे, पूजा कर निज हृदय धरूँ ॥8॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतगुरुपरम्परागतजिनमंदिरमठग्रन्थालयस्थित सर्वजिनशास्त्रेभ्यो अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

श्री जिनवर की समवसरण में, दिव्यध्वनि जब खिरती।
भव्य जनों को जिनवाणी से, शिवपुर राहें मिलती॥
द्वादशांग को नमूँ प्रकीर्णक, अंगबाह्य पद पूजूँ।
द्रव्य भाव श्रुत को वदूँ मैं, अर्घ्य चढ़ा भव छूटूँ॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्यसर्वश्रुतज्ञानाय पूर्णार्घ्यं ....।

जाप्य : ॐ ह्रीं द्वादशाङ्गश्रुतज्ञानाय नमः।

जयमाला

जय-जय दिव्यध्वनि सुखकारी, जिन भाषित कल्याणी।
मोह तिमिर का नाश कराती, स्व-पर भेद विज्ञानी॥
वस्तु स्वरूप बताती हैं ये, मंगलकरणी वाणी।
सप्तभंग से वर्णन करती, ज्योतिर्मय जिनवाणी॥1॥
सात तत्त्व अरु नव पदार्थ का, वर्णन ये करती हैं।
प्रभु वाणी से बरसे अमृत, संकट सब हरती हैं॥
अनेकांतमय वाणी प्यारी, तीन जगत हितकारी।
चार कोस तक जीव सुने हैं, जन-जन की उपकारी॥2॥
तालु ओष्ठ कंठादि न हिलते, मुख कांती न बदलती।
प्रभु वाणी ओंकारमयी है, सर्व अंग से खिरती॥
द्वादशांगमय वाणी जिसमें, दृष्टिवाद बारहवां।
पाँच भेद है परिकर्म और, सूत्र कहा है दूजा॥3॥
श्री प्रथमानुयोग तीजा है, चौदह पूर्व सुचारा।
पाँचवी चूलिका है मानी, जल थल गत है न्यारा॥
माया रूपाकाश गता है, चौदह कहे प्रकीर्णक।
जिनवर के मुख से निकले हैं,नमन करूँसुखकारक॥4॥
मलयाचल चंदन गंगाजल, से भी यह शीतल है।
विषय दाह भव ताप मिटाती, जिनवाणी संबल है॥
स्याद्वाद ये परम औषधी, भव पीड़ा को हरती।
एकांती का मान नशाती, सत् पथ को दिखलाती॥5॥
नंत काल से हे जिनमाता! तुमको भूल गये थे।

भेद ज्ञान का ज्ञान नहीं निज, स्वरूप भूल गये थे॥
गुरु कृपा से जिनवाणी सुन, तीन रत्न को पाया।
है अपूर्व उपकार तुम्हारा, आतम बोध जगाया॥6॥
तीन मुहूर्त तीन संध्या में, अर्द्ध रात्रि में खिरती।
गणधर इन्द्र चक्री पूछे तब, शेष समय भी खिरती॥
अमृत हीरक झरने जैसी, सबके मन को भाती।
चिदानंद चैतन्य स्वरूपी, स्व-पर भेद बतलाती॥7॥
समवसरण में खिरती वाणी, द्वादश सभा सुने हैं।
पुण्य पाक से भव्यों ने सब, सम्यक् फूल चुने हैं॥
भक्ति पात्र में जिनवचनामृत, श्रद्धा से पीते हैं।
जन्म जरा से दूर अजर अविनाशी हो जीते हैं॥8॥
जो पढ़ते हैं नित जिनवाणी, दुख से ना घबराते।
क्षायिक नव लब्धि को पाकर, पूर्णज्ञान पा जाते॥
जो जिनवाणी विनय न करता, ज्ञान हीन होता है।
दुर्बुद्धी अविवेकी होकर, जीवन भर रोता है॥9॥
जिनवाणी का सार यही तन, चेतन भेद सु-जानो।
शेष चार अनुयोग इसी का, वृहद् रूप पहचानो॥
जयवंतों जिनवाणी माँ तुम, मुझको ऐसा बल दो।
चलूँ आपके बतलाये पथ, आतम निर्मल कर दो॥10॥
जयवंतों गणधर स्वामी श्री, कुन्द-कुन्द गुण आगर।
जय धरसेन श्री पूज्यपाद गुरु, हे 'विद्या' के सागर॥
ज्ञान सिन्धु में अवगाहन कर, कर्म मलों को धोऊँ।
यही प्रार्थना जिन वचनों की, गुणमाला नित गाऊँ॥11॥

पंच परम पद में भरा, द्वादशांग भंडार।
जिनवाणी जिन सम कही, वंदूँ बारंबार॥12॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूतस्याद्वादमयीगर्भितसरस्वतीद्वादशांगश्रुतज्ञानाय जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

जय-जय जिनवाणी, जग कल्याणी, मंगलकारी कष्ट हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो॥

इत्याशीर्वादः